गुरु हर किशन साहिब
(1656–1664, गुरगद्दी 1661–1664)

गुरु हर किशन साहिब, जो गुरु हर राय साहिब और माता किशन कौर जी के दूसरे और सबसे छोटे सुपुत्र थे, का जन्म 7 जुलाई 1656 को कीरतपुर में हुआ। रामराय जिसके कारण गुरगद्दी से वंचित हुआ, इसका वर्णन पिछले अध्याय में किया जा चुका है। गुरु हर किशन जी गुरगद्दी पर जिस समय बैठे, उनकी आयु मात्र पाँच वर्ष तीन महीने की थी।

रामराय दिल्ली बादशाह के दरबार में था और जब उसने गुरु हर किशन जी को गुरगद्दी मिलने की खबर सुनी तो वह ईर्ष्या से जल–भुन गया। मसन्द गुरदास[1] जो रामराय का सेवक था, ने उसे धीरज दिया कि, "उदास होने की आवश्यकता नहीं। देश के इस तरफ अपने बहुत श्रद्धालू हैं। बादशाह भी आपका आदर–सम्मान करता है।" रामराय की तसल्ली न हुई। बोला, "तुम्हें पता नहीं, जब इस देश के लोगों को खबर मिलेगी कि गुरगद्दी मेरे छोटे भाई को दे दी गई है, वे मुझसे मुँह फेरकर उसकी तरफ चले जाएँगे।" फिर भी, रामराय ने गुरदास की सलाह मान ली और अपने मसन्द हर ओर भेज दिये, एक तो यह बताने के लिए कि उसे गुरगद्दी मिल गई है, दूसरा सिखों से भेंटें लाने के लिए। लेकिन, जो सिख जानते थे कि गुरु हर किशन जी गुरगद्दी पर बैठे हैं, उन्होंने रामराय को अपना गुरु मानने से इन्कार कर दिया। तब रामराय ने बादशाह के पास अपना मामला पेश करने का फैसला किया। उसने औरंगजेब से शिकायत की, "बादशाह सलामत, मेरे पिता ने मेरे छोटे भाई को अपना उत्तराधिकारी बना दिया है और उसने गुरगद्दी के साथ–साथ पिता की जायदाद और भेंटों आदि पर कब्ज़ा कर लिया है। ऐसी मुसीबत मेरे ऊपर इसलिए आई है क्योंकि मैं आपका हुक्म मानता रहा हूँ। इसी कारण मेरे पिता आपके खिलाफ हो गये और मृत्यु के समय मेरे छोटे भाई को हुक्म दे गये कि वह आपके साथ कभी समझौता न करे और न ही आपका मुँह देखे। अब मेरी अर्ज़ है कि आप मेरे छोटे भाई को दिल्ली बुलाओ और हुक्म
दो कि करामातें दिखाये, जैसा कि मैंने दिखाई थीं।"

इस पर औरंगजेब को भी अच्छा अवसर मिल गया अपना मिशन पूरा करने के लिए। औरंगजेब सारे हिंदुओं को मुसलमान बनाना चाहता था, पर उसको पंजाब में इसकी सफलता की आशा नहीं थी, क्योंकि लोग वहाँ गुरु जी का बहुत सत्कार करते थे। अगर बादशाह रामराय को गुरगद्दी पर बिठा देने में सफल हो सके तो उसकी मार्फत पंजाब में इस्लाम धर्म को फैलाने में शायद वह कामयाब हो जाए, या फिर दोनों भाइयों में झगड़ा खड़ा करने में सफल हो जाए तो वे दोनों आपस में लड़ मरेंगे और बादशाह का मंतव्य पूरा हो जाएगा।

औरंगजेब ने यह शैतानी योजना बनाने के बाद अम्बेर (जयपुर) के राजा जय सिंह को बुलाकर हुक्म दिया कि गुरु हर किशन साहिब को दिल्ली बुलाये और साथ ही कहा, "मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। यह ख़्याल रहे कि गुरु साहिब को सफ़र में हर प्रकार की इज्ज़त दी जाए।" रामराय यह सुनकर खुश हो गया कि उसके भाई को दिल्ली बुलाया गया है।

बहुत सारे लेखक इस बात में यकीन नहीं करते कि गुरु हर किशन जी एक बालक होते हुए उच्च योग्यता के मालिक थे और पूरे भरोसे के साथ सत्य के अभिलाषियों को शिक्षा देते रहे थे। **ये बुद्धिजीवी गुरु पदवी की पावनता को नहीं समझ सकते, क्योंकि ये हर तरह का व्यवहार आदमी की उम्र, बुद्धि और अनुभव के अनुसार ही सम्भव होना मानते हैं। उनकी दिव्य प्राप्तियाँ अथवा योग्यता उनकी गुरु पदवी के साथ ही आ गईं।** जैसा कि पीछे बताया गया है। गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित हुई गुरबाणी के अनुसार गुरु का अर्थ है– ज्योति अर्थात ईश्वरीय प्रकाश, गुरगद्दी मिलते ही व्यक्ति की उम्र, बुद्धि या अनुभव का कोई मूल्य नहीं होता। तब उस व्यक्ति में ईश्वरीय ज्योति काम करती है। ईश्वरीय ज्योति की शक्ति मनुष्य की बुद्धि की पहुँच से बाहर है। बुद्धिजीवी अपने तकनीकी ज्ञान के द्वारा ईश्वरीय ज्योति की शक्ति को देख या समझ नहीं सकते। हमारी तकनीकी जानकारी या बुद्धि, असल में, "मैं हूँ" है, या अहं का पर्दा। अकाल पुरुख सब जगह है और हमारे में भी, पर यह अहं का पर्दा हमें उससे अलग कर देता

है और सत्य को हमसे छिपाकर रखता है। गुरमत के अनुसार, मनुष्य पत्नी के तौर पर और अकाल पुरुख उसके पति के तौर पर एक साथ रहते हैं, पर अहं का पर्दा उन्हें अलग–अलग करके रखता है। जब पूर्ण गुरु की मेहर से यह अहं का पर्दा हट जाता है तो पत्नी का अपने पति परमेश्वर से मिलाप हो जाता है :

"धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी।
गुरि पूरे हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी।"

(मलार महल्ला 4, पृष्ठ 1263)

यह केवल पूर्ण गुरु की कृपा है जो अन्दर की आँखें खोल देती है **जिनसे हम अगम अकाल पुरुख को देख सकते है और शाश्वत् आत्मिक सुख की अवस्था में प्रवेश कर सकते हैं।**

"बिसमन बिसम भए बिसमाद।
जिनि बूझिया तिसु आया स्वाद।"

(गउड़ी सुखमनी महल्ला 5, 16–8, पृष्ठ 285)

उस अवस्था में पहुँचने के लिए पूर्ण गुरु की कृपा की याचना करनी ज़रूरी है। ऐसा करने के लिए व्यक्ति को अहं की भावना और तकनीकी ज्ञान का अभिमान त्यागना आवश्यक है और स्वयं को झुकाकर, बगैर किसी शर्त के अपने आप को गुरु जी के सम्मुख मेहर के लिए प्रार्थना करनी है। पाँच वर्ष की उम्र में वह कैसे एक उच्च दर्जे की प्राप्तियों का स्वामी हो सकते थे, इस प्रश्न का उत्तर अहं भरे मन से की गई दलीलों के द्वारा नहीं मिलता, बल्कि दिव्य दृष्टि के जरिये ही मिल सकता है। बाल आयु वाले गुरु जी की दिव्य शक्ति के बारे में प्रश्न का उत्तर यह समझने में है कि गुरु जी बेशक शरीर के कारण मनुष्य थे, पर वह थे ईश्वरीय ज्योति। विद्वान कहलाने वाले मनुष्यों के अहं से बिंधे हुए मन गुरु जी की ईश्वरता को समझने में बाधा उत्पन्न करते हैं। जब तक मनुष्य का मन अहं के नशे में रहता है, बुद्धि के वाद–विवाद का चक्कर चलता रहेगा। और ऐसा मनुष्य कभी भी ईश्वरीय ज्योति की शक्ति का अनुभव नहीं कर सकेगा, अकाल पुरुख को नहीं समझ सकेगा और न ही, अकाल पुरुख संबंधी कोई ज्ञान को प्राप्त कर सकेगा। तब अहंकार से भरा मन हैरान होता रहेगा कि एक पाँच वर्ष की आयु के गुरु साहिब किस तरह अलौकिक काम कर सकते थे।

राजा जय सिंह ने गुरु जी की महिमाओं के संबंध में सुना हुआ था और इस कारण खुश था कि गुरु जी के साथ जान–पहचान करने और उनके उपदेश सुनने का अवसर मिलेगा। उसने अपना एक सन्देश–वाहक कीरतपुर भेजा, गुरु जी को दिल्ली आने के लिए विनती करने की खातिर। गुरु जी ने इन्कार कर दिया क्योंकि उनके गुरु पिता जी ने उनको बादशाह से मिलने से मना किया हुआ था। राजा जय सिंह ने पुनः विनती करते हुए खत भेजा, "राजा जय सिंह बेहद विनम्र होकर गुरु जी से विनती करता है कि आप दिल्ली आओ ताकि उसे और दिल्ली में रहती उनकी संगतों को आपके दर्शन हो जाएँ। गुरु जी बादशाह को मिलने के संबंध में जो योग्य समझें, करें।" जय सिंह के सन्देश–वाहक ने गुरु जी से यह भी बताया कि उन्हें बादशाह से मिलने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा।

गुरु जी कीरतपुर से चल पड़े। राह में गुरु जी उन सिखों की प्रतीक्षा करने के लिए रुक गये जो गुरु जी के चलने के बाद कीरतपुर उनके दर्शन के लिए पहुँचे थे। उनमें वे लूले और कोढ़ी थे जिन्हें गुरु जी ने अपने हाथों से अरोग किया था। अम्बाला के निकट पंजोखड़ा गाँव में एक अहंकारी विद्वान ब्राह्मण आया और गुरु जी को बगैर नमस्कार किये उनके करीब आ बैठा। तब वह गुरु जी से बोला, "आप अपने आप को श्री हर किशन कहलवाते हो, सो कृष्ण महाराज से भी अधिक महान होगे। मुझे गीता का अनुवाद करके सुनाओ।" उस समय समीप ही एक गूंगा और अनपढ़ आदमी खड़ा था जिसका नाम छज्जू था और उसी गाँव में रहता था, जहाँ वह ब्राह्मण। जहाँ गुरु जी ने डेरा लगाया हुआ था, वहाँ छज्जू लंगर के लिए पानी पिलाने के सेवा करता था। गुरु जी ने ब्राह्मण से पूछा कि वह स्वयं गीता का अनुवाद करें या छज्जू से करवा दें ? ब्राह्मण ने सोचा कि छज्जू तो बोल भी नहीं सकता, वह किस तरह अनुवाद करके सुनाएगा ? सो, उसने ज़रा रुककर उत्तर दिया कि छज्जू कर दे। गुरु जी सदैव अपने पास एक छड़ी रखते थे। उन्होंने छज्जू को बुलाया, वह छड़ी उसके सिर पर रखी और कहा कि ब्राह्मण के प्रश्नों का

उत्तर देता चले। ब्राह्मण बिलकुल हैरान रह गया जब छज्जू ने एक–एक पंक्ति जो ब्राह्मण ने पूछी थी, की विस्तार से व्याख्या कर दी। तब ब्राह्मण गुरु जी के चरण–कमलों पर गिर पड़ा और अपने नासमझ व्यवहार के लिए क्षमा मांगी।

गुरु जी दिल्ली पहुँचे तो राजा जय सिंह, जो नंगे पांव चलकर गुरु जी को लेने आया था, ने गुरु जी का स्वागत किया। उसने गुरु जी से उसकी हवेली में रहने के लिए विनती की। अब उस स्थान पर नई दिल्ली में गुरद्वारा बंगला साहिब स्थित है। दिल्ली के हजारों लोग गुरु जी के दर्शन करने के लिए आए। गुरु जी के पवित्र दर्शन करके रोगी अरोग हो गये और दुखी लोगों को शान्ति मिल गई।

बादशाह ने गुरु जी के पहुँचने पर तोहफे भेंट किए और उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। गुरु जी ने उसके निमंत्रण को परवान नहीं किया और कहा, "मेरे बड़े भ्राता रामराय, आपके पास हैं और वह सभी सियासी मामलों का प्रबंध बादशाह सलामत के साथ अच्छी प्रकार कर लेगें और अच्छा है कि मैं उसमें दख़ल न दूँ। मेरा उद्देश्य सच्चे नाम का प्रचार करना है। रामराय मेरे से गुरगद्दी के कारण वैर–विरोध रखते हैं, और अगर बादशाह ने मेरे साथ कोई रियायत दिखलाई तो रामराय मेरे और अधिक विरोधी हो जाएँगे। सो, परिवार में संगीन झगड़ों से दूर रहना अच्छा है। इस और दूसरे अनेक कारणों के चलते मेरे पिता जी ने मुझे बादशाह से मिलने से मना कर दिया था।"

अगले रोज़ बादशाह का छोटा शहजादा मुअज्ज़म, गुरु जी के पास उपस्थित हुआ और अपने पिता की गुरु जी से मिलने की इच्छा का सन्देश दिया। गुरु जी ने जोर देकर कहा कि वह बादशाह से न मिलने के कारण पहले ही बता चुके हैं। अगर बादशाह को धर्म के बारे में कोई सन्देश चाहिए तो वह शहजादे की मार्फत दे देंगे। अगर बादशाह धर्म संबंधी सन्देश को समझ जाए और उस पर अमल करे तो उस पर गुरु नानक जी की कृपा होगी और वह खुश होगा। मुअज्ज़म ने वह धार्मिक सन्देश मांगा तो गुरु जी ने नानक साहिब का यह 'शबद' लिखवा दिया :

"किआ खाधै क्या पैधै होइ। जा मनि नाही सचा सोइ।
किआ मेवा क्या घिउ गुड्डु मिठा, किआ मैदा क्या मासु।
किआ कपड्डु क्या सेज सुखाली कीजहि भोग बिलासु।
किआ लसकर क्या नेब खवासी आवै महली वासु।
नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु।"

(वार माझ की, महल्ला 1, पृष्ठ 142)

बादशाह के हुक्म पर राजा जय सिंह गुरु जी की परीक्षा लेने के लिए मान गया कि गुरु जी दैवी शक्तियों के स्वामी हैं कि नहीं। राजा जय सिंह की पटरानी, दासियों वाले कपड़े पहनकर अन्य दासियों और रानियों के बीच बैठ गई। गुरु जी से विनती की गई कि वह पटरानी को पहचाने। गुरु जी ने उसी समय पहचान कर ली। इस पर राजा जय सिंह और उसकी रानियों ने गुरु जी की दैवी शक्ति को मान लिया।

उस समय दिल्ली में हैजा और चेचक(माता) बड़े जोर से फैल रहे थे। गुरु जी ने हुक्म दिया कि उनके लिए जितनी भी भेंटें आएँ, वे सब गरीबों का कष्ट दूर करने के लिए प्रयोग में लाई जाएँ। भोजन पदार्थ, दवाइयाँ और वस्त्र गरीबों और रोगियों को बांटें। इस प्रकार गुरु जी के बहुत सारे श्रद्धालू बन गये।

थोड़े समय के बाद गुरु जी को बहुत तेज बुखार चढ़ गया जिससे चेचक निकल आई।[2] गुरु जी के माता जी पास बैठकर बोले, "पुत्र जी, आप अपनी मृत्यु क्यों चाहते हो ? आपको अभी–अभी तो गुरगद्दी बख्शी गई है और अभी आप बालक अवस्था में ही हो, सो इतनी जल्दी संसार से चले जाना ठीक नहीं लगता।" गुरु जी ने उत्तर दिया, "माता जी, चिन्ता न करो। मेरी सुरक्षा अकाल पुरुख की रज़ा में है। वही अपनी फसल को काटनेवाला है, यह उसकी खुशी है कि कभी वह हरी–भरी फसल को काट ले, या आधी हरी को या कभी पक जाने के बाद काटे। करतार जो करेगा, वही सबसे अच्छा होगा।"

गुरु जी कई दिन बीमार रहे। उन्हें ज्ञान था कि उनका अन्त समय आ गया है। उन्होंने पाँच पैसे और एक नारियल मंगवाया। उन्होंने अपना हाथ तीन बार हवा में धुमाया जो अपने उत्तराधिकारी के इर्दगिर्द तीन परिक्रमाएँ करने का सूचक था और कहा, "बाबा बकालो।" जिसका अर्थ था कि गुरगद्दी

का अधिकारी बकाला गाँव में है। तब गुरु जी 30 मार्च 1644 को परम ज्योति में समा गये। उनकी देह का संस्कार जमना नदी के किनारे किया गया, जहाँ अब गुरद्वारा बाला साहिब स्थित है।

1– यह गुरदास, भाई गुरदास जी से दूसरा है।

2. कहा जाता है कि चेचक दिल्ली में इतनी जोर से फैल गई कि गुरु जी ने मानवीय दर्द की भावना से इसे अपने ऊपर ले लिया और दिल्ली निवासियों का इससे छुटकारा कर दिया। राजा जय सिंह ने जल से भरी एक हौद बनवाई। गुरु जी ने इसके पानी में अपने चरण धोये और बाद में जिस किसी ने भी उस जल में स्नान किया, उसका चेचक रोग दूर हो गया।